कथा सरिता

आधी रोटी का कर्ज़

पत्नी बार बार माँ पर इल्ज़ाम लगाए जा रही थी और पति बार बार उसको अपनी हद में रहने को कह रहा था। लेकिन पत्नी चुप होने का नाम ही नहीं ले रही थी। वो ज़ोर ज़ोर से चीख-चीखकर कह रही थी कि उसने अंगूठी टेबल पर ही रखी थी और तुम्हारे और मेरे अलावा इस कमरें में कोई नहीं आया। अंगूठी हो ना हो माँ जी ने ही उठाई है।

बात जब पति की बर्दाश्त के बाहर हो गई तो उसने पत्नी के गाल पर एक ज़ोरदार तमाचा दे मारा। अभी तीन महीने पहले ही तो शादी हुई थी। पत्नी से तमाचा सहन नहीं हुआ, वह घर छोड़कर जाने लगी और जाते जाते पति से एक सवाल पूछा कि तुमको अपनी माँ पर इतना विश्वास क्यूं है ?

तब पति ने जो जवाब दिया उस जवाब को दरवाज़े के पीछे खड़ी माँ ने सुना तो उसका मन भर आया। पति ने पत्नी को बताया कि जब वह छोटा था तब उसके पिताजी गुज़र गए। माँ मोहल्ले के घरों में झाड़ू-पोछा लगाकर जो कमा पाती थी उससे एक वक्त का खाना आता था।

माँ एक थाली में मुझे परोस देती थी और खाली डिब्बे को ढ़क कर रख देती थी और कहती थी मेरी रोटियाँ इस डिब्बे में हैं, बेटा तू खा ले।

मैं भी हमेशा आधी रोटी खाकर कह देता था कि माँ मेरा पेट भर गया है, मुझे और नहीं खाना है।

माँ ने मेरी जूठी आधी रोटी खाकर मुझे पाला पोसा और बड़ा किया है। आज मैं दो रोटी कमाने लायक हो गया हूँ, लेकिन यह कैसे भूल सकता हूँ कि मां ने उम्र के उस पड़ाव पर अपनी इच्छाओं को मारा है। वह माँ आज उम्र के इस पड़ाव पर किसी अंगूठी की भूखी होगी, यह मैं सोच भी नहीं सकता।

तुम तो तीन महीने से मेरे साथ हो, मैंने तो माँ की तपस्या को पिछले

पच्चीस वर्षों से देखा है। यह सुनकर माँ की आंखों से आँसू छलक उठे। वह समझ नहीं पा रही थी कि बेटा उसकी आधी रोटी का कर्ज़ चुका रहा है या वह बेटे की आधी रोटी का कर्ज़...!!

टूटना नहीं...

एक ट्रक में मारबल का सामान जा रहा था। उसमें टाइल्स भी थी और भगवान की मूर्ति भी थी ...!! रास्ते में टाइल्स ने मूर्ति से पूछा, भाई ऊपर वाले ने हमारे साथ ऐसा भेद-भाव क्यों किया है ? मूर्ति ने पूछा, कैसा भेद भाव ? टाइल्स ने कहा, तुम भी पत्थर, मैं भी पत्थर ..!! तुम भी उसी खान से निकले, मैं भी। तुम्हें भी उसी ने ख़रीदा बेचा, मुझे भी। तुम भी मन्दिर में जाओगे, मै भी। पर वहां तुम्हारी पूजा होगी, और मैं पैरों तले रौंदा जाऊंगा, ऐसा क्यों ?

मूर्ति ने बड़ी शालीनता से जवाब दिया, तुम्हें जब तराशा गया, तब तुमसे दर्द सहन नहीं हुआ और तुम टूट गये, टुकड़ों में बंट गये। और मुझे जब तराशा गया तब मैंने दर्द सहा, मुझ पर लाखों हथौड़े बरसाये गये, मैं रोया नहीं!

मेरी आँख बनी, कान बने, हाथ बना, पांव बने.. फिर भी मैं टूटा नहीं।

इस तरह मेरा रूप निखर गया और मैं पूजनीय हो गया। तुम भी दर्द सहते तो तुम भी पूजे जाते, मगर तुम टूट गये, और टूटने वाले हमेशा पैरों तले रौंदे जाते हैं।

मोरलः भगवान जब आपको तराश रहा हो, तो टूट मत जाना, हिम्मत मत हारना। अपनी रफ़्तार से आगे बढते जाना, मंज़िल ज़रूर मिलेगी। सुन्दर पंक्तियाँः मुश्किलें केवल बेहतरीन लोगों के हिस्से में ही आती हैं...क्योंकि वो लोग ही उसे बेहतरीन तरीके से अंजाम देने की ताकत रखते हैं।

रख हौंसला वो मंज़र भी आयेगा।

प्यासे के पास चलकर समंदर भी आयेगा।।

थक कर ना बैठ, ऐ मंज़िल के मुसाफ़िर।

मंज़िल भी मिलेगी और जीने का मज़ा भी आयेगा।

भगवान की प्लानिंग

एक बार भगवान से उनका सेवक कहता है, भगवान! आप एक जगह खड़े-खड़े थक गये होंगे, एक दिन के लिए मैं आपकी जगह मूर्ति बन कर खड़ा हो जाता हूँ, आप मेरा रूप धारण कर घूम आओ। भगवान मान जाते हैं, लेकिन शर्त रखते हैं कि जो भी लोग प्रार्थना करने आयें, तुम बस उनकी प्रार्थना सुन लेना, कुछ बोलना नहीं। मैंने उन सभी के लिए प्लानिंग कर रखी है, सेवक मान जाता है। सबसे पहले मंदिर में बिज़नेस मैन आता है और कहता है, भगवान! मैंने एक नयी फैक्ट्री डाली है, उसे खूब सफल करना। वह माथा टेकता है, तो उसका पर्स नीचे गिर जाता है। वह बिना पर्स लिये ही चला जाता है। सेवक बेचैन हो जाता है। वह सोचता है कि रोक कर उसे बताये कि पर्स गिर गया, लेकिन शर्त की वजह से वह नहीं कह पाता। इसके बाद एक गरीब आदमी आता है और भगवान को कहता है कि घर में खाने को कुछ नहीं है, भगवान मदद करो। तभी उसकी नज़र पर्स पर पड़ती है। वह भगवान का शुक्रिया अदा करता है और पर्स लेकर चला जाता है। अब तीसरा व्यक्ति आता है, वह नाविक होता है। वह भगवान से कहता है कि मैं 15 दिनों के लिए जहाज लेकर समुद्र की यात्रा पर जा रहा हूँ, यात्रा में कोई अड़चन न आये भगवान। तभी पीछे से बिज़नेस मैन पुलिस के साथ आता है और कहता है कि मेरे बाद ये नाविक आया है, इसी ने मेरा पर्स चुरा लिया है। पुलिस नाविक को ले जा रही होती है, तभी सेवक बोल पड़ता है। अब पुलिस सेवक के कहने पर उस गरीब आदमी को पकड़ कर जेल में बंद कर देती है। रात को भगवान आते हैं, तो सेवक खुशी खुशी पूरा किस्सा बताता है। भगवान कहते हैं, तुमने किसी का काम बनाया नहीं, बल्कि बिगाड़ा है। वह व्यापारी गलत धंधे करता है, अगर उसका पर्स गिर भी गया, तो उसे फर्क नहीं पड़ता था। इससे उसके पाप ही कम होते, क्योंकि वह पर्स गरीब इंसान को मिला था।

पर्स मिलने पर उसके बच्चे भूखों नहीं मरते। रही बात नाविक की, तो वह जिस यात्रा पर जा रहा था, वहाँ तूफान आनेवाला था, अगर वह जेल में रहता, तो जान बच जाती। उसकी पत्नी विधवा होने से बच जाती। तुमने सब गड़बड़ कर दी।

कई बार हमारी लाइफ में भी ऐसी प्रॉब्लम आती है, जब हमें लगता है कि ये मेरे साथ ही क्यों हुआ। लेकिन इसके पीछे भगवान की प्लानिंग होती है। जब भी कोई प्रॉब्लम आये, उदास मत होना। इस कहानी को याद करना और सोचना कि जो भी होता है, अच्छे के लिए होता है।

पटियाला-पंजाब। ब्रह्माकुमारीज़ के सनोर सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित विशाल शोभायात्रा में ब्र.कु. शांता का स्वागत करते हुए शिरोमणि अकाली दल से सनोर के वरिष्ठ नेता सरदार तजिन्दर पाल सिंह संधू।

कुरुक्षेत्र-हरियाणा। 'शिव ज्योति भवन' के शिलान्यास के अवसर पर ध्वजारोहण करते हुए विधायक सुभाष सुधा, जिला परिषद के चेयरमैन गुरदयाल सुनेहदी, ब्र.कु. लक्ष्मण, ब्र.कु. राज बहन, ब्र.कु. आदर्श,अमृतसर, ब्र.कु. शकुंतला, ब्र.कु. सरोज, ब्र.कु. सीमा व अन्य।

मोतिहारी-बिहार। दो दिवसीय `आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं तनाव मुक्त जीवन' विषय पर सेमिनार के उद्घाटन अवसर पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. सीता। साथ हैं ब्र.कु. विभा, ब्र.कु. अशोक वर्मा व ब्र.कु. धनंजय।

सादुल शहर-राज.। जे.बी. टीचर्स ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार `भारत में मानवाधिकार शिक्षा' के दौरान ब्र.कु. माधवी को गेस्ट ऑफ ऑनर देकर सम्मानित करते हुए इंस्टीट्यूट के डायरेक्टर नवीन बिश्नोई और व्याख्याता उषा गोदारा।

गुमला-झारखण्ड। नये गीतापाठशाला का उद्घाटन करते हुए वकील नवीन जी, मुखिया प्रसाद जी व ब्र.कु. शान्ति। साथ हैं अन्य भाई बहनें।

पटना-बिहार। आध्यात्मिक कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए अखिल भारतीय साधु समाज के अध्यक्ष स्वामी हरी नारायण जी, पटना हाई कोर्ट के पूर्व न्यायाधीश राजेन्द्र प्रसाद, ब्र.कु. संगीता, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. अंजू एवं ब्र.कु. रविन्द्र।